3 कुत्ते की वफ़ादारी

– लल्लुभाई रबारी

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने अपने स्वामी के प्रति जानवर की वफ़ादारी को उजागर किया है। कभी–कभी जल्दबाजी में काम करने से पछताने की नौबत आ जाती है। लेखक ने यह बात कुत्ते और बनजारे की इस कहानी के माध्यम से बताई है।

उत्तर गुजरात के पाटण जिले में राधनपुर नाम का एक छोटा–सा नगर है। वहाँ एक तालाब है, जिसके तट पर एक कुत्ते की समाधि है। समाधि और वह भी कुत्ते की ! यह जानकर आश्चर्य होगा ही। उसके पीछे एक सुंदर और हृदय को हिला देनेवाली कथा है।

पुराने जमाने में व्यापार का सामान लाने–ले जाने का काम बनजारे करते थे। एक बनजारा था। वह अपने ऊँटों पर गाँवों का माल सामान लादकर शहरों में ले जाता था और वहाँ से मिसरी, गुड़–मसाले आदि भरकर गाँवों तक ले आता था। लाखों का व्यापार था उसका। इसीलिए लोग उसे लाखा बनजारा कहते थे। लाखा के पास एक सुंदर कुत्ता था। कुत्ता बड़ा वफादार था। रात को वह बनजारे के पड़ाव की रखवाली करता था, अगर चोर–लुटेरे पड़ाव की तरफ आते दिखाई देते थे तो कुत्ता भौंक–भौंक कर उन्हें दूर भगा देता था। बनजारा अपने कुत्ते की वफादारी से बहुत खुश था।

एक बार बनजारा व्यापार में मार खा गया और रुपयों की जरूरत आ पड़ी। वह राधनपुर के एक सेठ के पास पहुँचा। उसने अपनी बात बताई।

सेठ ने कहा, ''रुपये तो मैं दे दूँगा, मगर उसके बदले में तुम क्या गिरवी रखोगे ?''

लाखा बोला, ''सेठजी मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। मैंने व्यापार में सब कुछ खो दिया है। मेरी जबान पर विश्वास रखें और मुझे रुपये दे दीजिए। मैं आपकी पूरी रकम सूद समेत एक साल में ही चुका दूँगा।''

सेठ बोले; ''कोई बात नहीं। तुम्हारे पास यह कुत्ता है। तो तुम इसे ही जमानत के रूप में दे दो। जब तुम सारे रुपये लौटा दोगे, तब मैं भी कुत्ता तुम्हें वापस दे दूँगा।''

बनजारे को दु:ख तो बहुत हुआ अपने कुत्ते को देने में, मगर कोई चारा नहीं था। रुपये लेकर वह चला गया।

कुछ दिन बीते। एक बार सेठ के यहाँ चोरी हुई। कुत्ते ने चोरों का पीछा किया। दूर जंगल में जाकर चोरों ने सारा माल–सामान जमीन में गाड़ दिया और वहाँ से नौ–दो–ग्यारह हो गए। कुत्ता वहाँ भौंक–भौंककर सेठ को

बताने लगा कि लुटेरे आपकी दुकान को तोड़कर माल उठा ले गए हैं। सेठ तो हक्का–बक्का ही रह गए। कुत्ता सेठ की धोती पकड़कर आगे खींचने लगा। सेठ कुत्ते के पीछे-पीछे चलने लगे। जहाँ चोरों ने माल छिपाया था, वहाँ जाकर कुत्ता अपने पैरों से मिट्टी खोदने लगा। थोड़ा ही खोदने पर सब सामान निकल आया। सेठ की खुशी का कोई पार नहीं था। वह कुत्ते को प्रेम से थपथपाने लगा। कुत्ते की वफादारी पर वह मुग्ध हो गया। घर जाकर उसने एक चिट्ठी लिखकर कुत्ते के गले के पट्टे में बाँधकर कहा, ''कुत्ते भाई – जाओ तुम अपने मालिक लाखा बनजारा के पास,तुम मुक्त हो।'' कुत्ता खुश हो गया और अपने मालिक से मिलने के लिए जल्दी-जल्दी भागने लगा।

इधर लाखा ने भी व्यापार में खूब रुपया कमाया। वह सेठ को उसकी रकम वापस करने के लिए उसी रास्ते से आ रहा था। उसने दूर से अपने कुत्ते को अपनी ओर आते हुए देखा। वह नाराज़ हो गया। सोचने लगा कि कुत्ते ने मेरी जबान काट ली है। उसने बेवफाई की है। अब मैं सेठ को क्या मुँह दिखाऊँगा? उसने आव देखा न ताव; बस, कुत्ते के माथे पर लाठी का प्रहार कर दिया। कुत्ता बेहोश होकर गिर पड़ा। लाखा ने देखा कि कुत्ते के गले में एक चिट्ठी बँधी है। उसने इसे खोलकर पढ़ा; 'लाखा, तुम्हारे कुत्ते ने मुझे सूद समेत रुपये लौटा दिए हैं; अतः कुत्ते को मैं मुक्त करता हूँ। उसने मेरे घर चोरी किए गए माल-सामान को वापस दिलवा दिया है। खुश होकर मैंने स्वयं इसे मुक्त किया है।'

लाखा तो चकित हो गया। वह चिल्लाने लगा – ''हाय, यह मैंने क्या कर दिया? हाय, यह मैंने क्या कर दिया?'' वह कुत्ते के शव को अपनी गोदी में लेकर फूट-फूटकर रोने लगा, लेकिन अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

उसने उस वफ़ादार कुत्ते की समाधि बनवाई जो आज भी पाटण जिले के राधनपुर के तालाब के किनारे पर खड़ी है। और उस कुत्ते की वफ़ादारी की कथा संसार को सुना रही है।

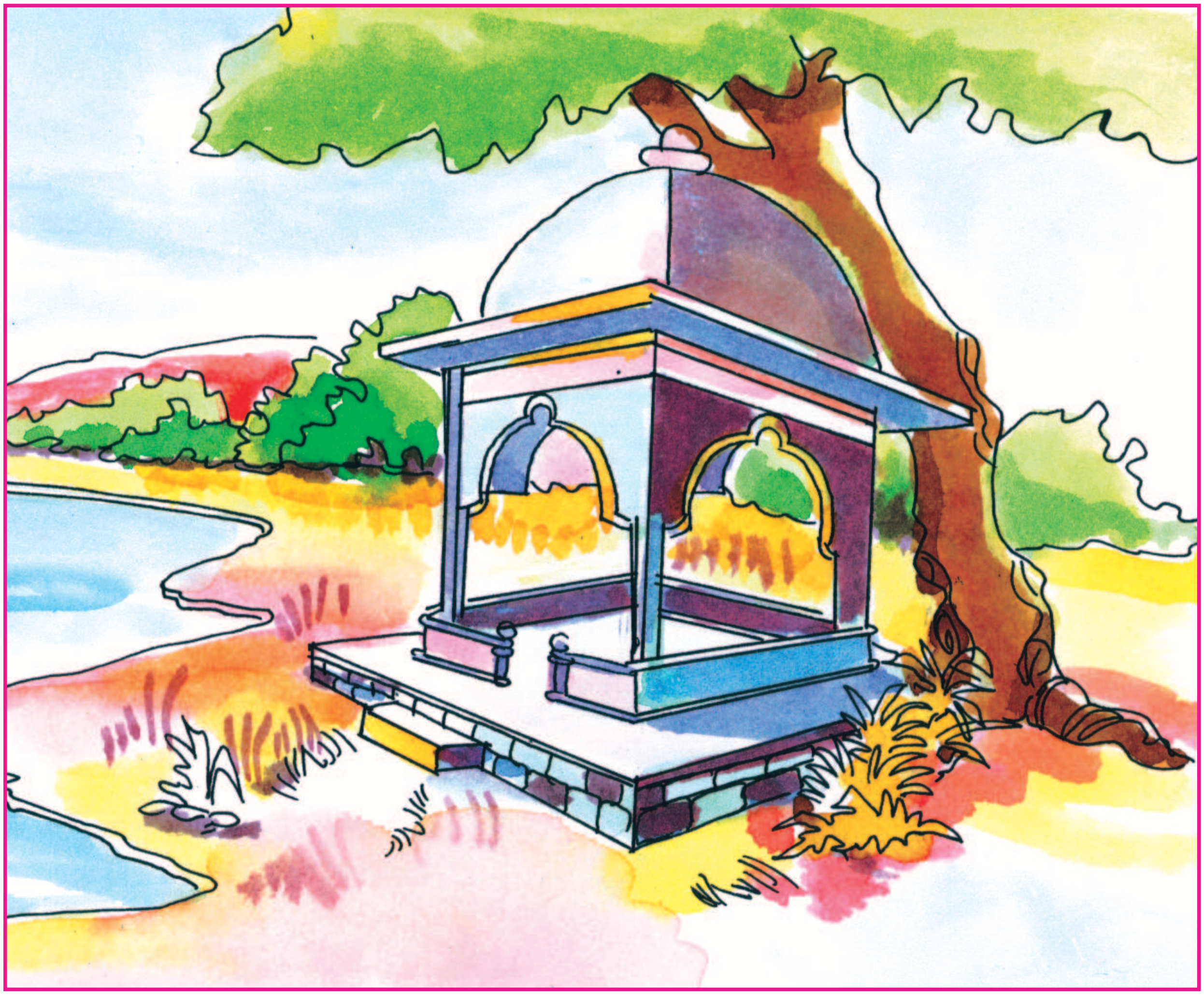

शब्दार्थ

समाधि स्मारक **वफ़ादार** स्वामिभक्त **बनजारा** एक विचरती जाति **पड़ाव** यात्रा में कुछ समय का ठहराव **लादना** किसी के ऊपर बहुत-सी वस्तुएँ रखना **लुटेरा** लूटने वाला, डाकू **मिसरी** चीनी, शक्कर **लौटना** वापस आना **मुग्ध** आसक्त, मोहित **सूद** ब्याज **शव** मृतदेह **गोद** आँचल, खोळो (गुज.)

मुहावरे

- **हृदय हिला देना** – हृदय को द्रवित करना
- **नौ-दो ग्यारह होना** – भाग जाना
- **मार खा जाना** – नुकसान होना
- **हक्का-बक्का रह जाना** – चकित होना
- **फूटी कौड़ी न होना** – अत्यंत गरीब होना
- **आव देखा न ताव** – बिना सोचे समझे काम करना
- **कोई चारा न होना** – कोई उपाय न होना, रास्ता न होना
- **फूट-फूट कर रोना** – जोर-जोर से रोना

कहावत

अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत – समय निकल जाने पर पछताने से क्या फायदा।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग कहानी के जिस वाक्य में हुआ हो वह वाक्य पढ़िए :

(1) समाधि (2) बनजारा (3) वफ़ादार (4) शव

(5) लुटेरा (6) जमानत (7) सूद (8) गोद

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) समाधि क्यों बनाई जाती है ?

(2) आप इस कहानी को और कौन-कौन से शीर्षक देना चाहेंगे ?

(3) कुत्ते को वफ़ादार प्राणी क्यों कहा गया है ?

(4) बनजारे ने कुत्ते को आते देख कुछ सोचा होता तो क्या होता ?

(5) सेठ ने कुत्ते को क्यों मुक्त कर दिया ?

3. शब्दों को शब्दकोश के क्रम में रखिए :

सुंदर, वापस, वफ़ादार, इसीलिए, आश्चर्य, लुटेरा

4. 'यदि आप होते तो क्या करते ?' बताइए :

(1) कुत्ते को जमानत पर रखकर सेठ ने पैसे दिए, सेठ की जगह आप होते तो.....

(2) लाखा ने कुत्ते को बेवफा समझ कर लाठी का प्रहार किया, लाखा की जगह आप होते तो.....

5. पढ़िए, हँसिए और सही शब्द लिखिए :

राजा / राजी	ग्वाला / ग्वालि	अभिनेता / अभिनेती	रानी / राना	शेरनी / शेरा
रानी	________	________	________	________

सुनार / सोनारा	ऊँट / ऊँटी	लुटेरा / लुटेर	बनजारा / बनजारी	सेठ / सेठी
________	________	________	________	________

स्वाध्याय

1. ढाँचे पर से कहानी लिखिए :

एक नौकर द्वारा हार चोरी करना – सेठ का सभी नौकरों से पूछना – किसी का चोरी कबूल न करना – सेठ द्वारा युक्ति करना – प्रत्येक को सात–सात इच की लकड़ी देना – जादू की छड़ी होने की बात कहना – दूसरे दिन दिखाने को कहना – चोर की लकड़ी एक इच बढ़ जाएगी – घर जाकर हार चुराने वाले नौकर का एक ईच लकड़ी काटना – दूसरे दिन चोर का पकड़ा जाना ।

2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) रात को कुत्ता पड़ाव की रखवाली कैसे करता था ?

(2) सेठ ने बनजारे के साथ कौन-सी शर्त रखी ?

(3) सेठ ने कुत्ते को क्यों मुक्त कर दिया ?

(4) इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

3. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द का लिंग परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए :

जैसे : घोड़ा **दौड़ रहा है।**

घोड़ी दौड़ रही है।

(1) सेठ ने कहा, रुपये तो मैं दे दूँगा।

(2) बनजारे को बहुत दु:ख हुआ।

(3) ऊँट की पीठ पर सामान लदा है।

(4) मैदान में लड़का खेल रहा है।

4. बक्से में से लिंग आधारित शब्दों के जोड़े मिलाइए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

शिष्य, नागिन, शिक्षक, घोड़ा, गाय,

देव, बैल, शिष्या, घोड़ी, शिक्षिका, देवी, नाग

जैसे :

गाय ——— बैल   ☐ ——— ☐

वाक्य प्रयोग → गाय का दूध सेहत के लिए अच्छा है।

वाक्य प्रयोग → बैल किसान का दोस्त है।

5. संज्ञा पहचानिए :

- सैनिक हमारे देश की रक्षा करते है।
- हमें देश की प्रगति के बारे में सोचना चाहिए।
- गंगा भारत की पवित्र नदी है।

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए। रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए :

(1) आशा विमान चलाती है।

(2) नर्मदा गुजरात की सबसे बड़ी नदी है।

(3) हिमालय भारत का सबसे ऊँचा पर्वत है।

(4) नीम गुणकारी पेड़ है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द आशा, नर्मदा, हिमालय और नीम किसी खास व्यक्ति, नदी, पर्वत और पेड़ का निर्देश करते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा : किसी खास व्यक्ति, प्राणी या स्थान को सूचित करनेवाली संज्ञा को '**व्यक्तिवाचक संज्ञा**' कहते हैं।

1. निर्देशित शब्दों में से व्यक्तिवाचक संज्ञा के ऊपर (✓) की निशानी कीजिए :

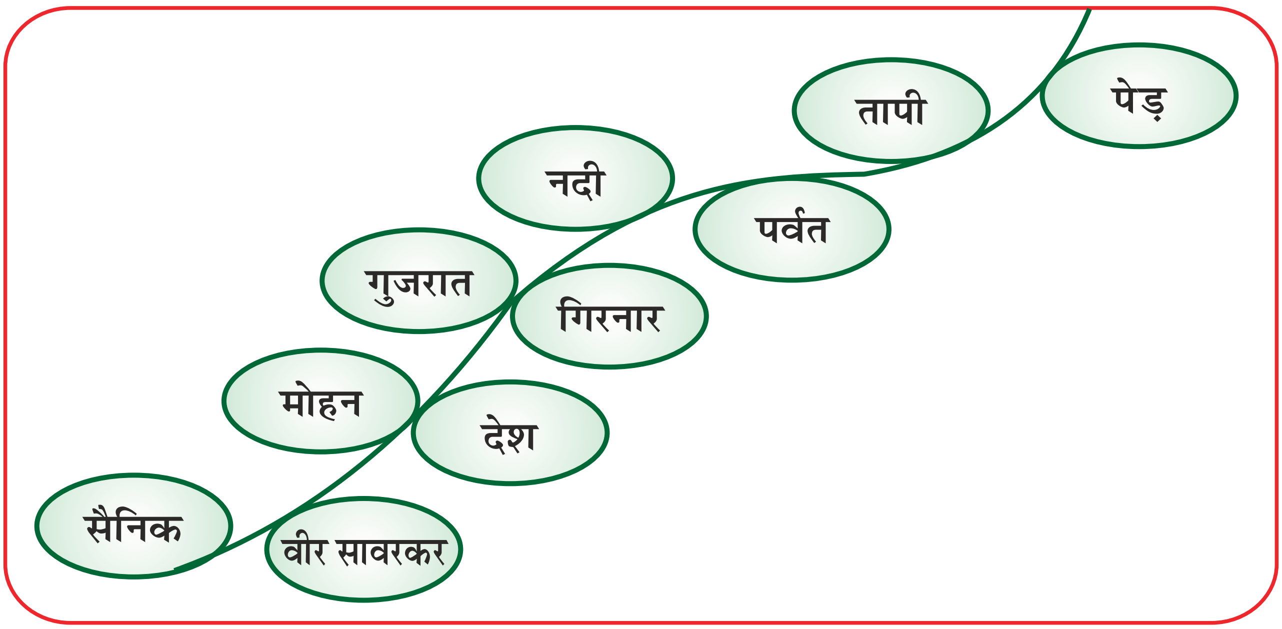

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए। रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए :

(1) हमारे देश के सैनिक बहादुर हैं।

(2) हमारी गाय का नाम गौरी है।

(3) नदी को लोकमाता कहते हैं।

(4) कुत्ता वफ़ादार प्राणी है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द सैनिक, गाय, नदी और कुत्ता-ये शब्द संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं।

जातिवाचक संज्ञा : जो शब्द संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं वे '**जातिवाचक संज्ञा**' कहलाते हैं।

2. जातिवाचक शब्द छाँटकर सूची बनाइए :

छात्र
प्रगति सुंदर लड़का
सुभाषचंद्र पेड़ पर्वत
नदी नीम
गाय

3. नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों को कोष्ठक में उचित स्थान पर रखिए :

(भारत, हिमालय, नदी, वीर सावरकर, सैनिक, नर्मदा, पर्वत, नीम का पेड़)

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा

योग्यता-विस्तार

इतना जानिए

कैसे बोलते हैं ?

- पंछी का चहकना
- मुर्गे का बांग देना
- मक्खी का भिनभिनाना
- कुत्ते का भौंकना
- भेड़ का मिमियाना
- घोड़े का हिनहिनाना
- भैंस का बँबाना
- बिल्ली का म्याउँ-म्याउँ करना
- हाथी का चिँघाड़ना
- मेढक का टर्राना
- शेर का दहाड़ना
- कौए का काँव-काँव करना
- मोर का टहुकना
- भौंरे का गुंजन
- गधे का रेंकना
- गाय का रंभाना
- ऊँट का बलबलाना
- बकरी का मिमियाना
- चूहे का चूँ-चूँ करना
- साँप का फुफकारना
- बंदर का घुरकियाँ करना
- बाघ का गुर्राना

☞ **पुस्तकालय में जाइए और पढ़िए :**

पशु-पक्षी आधारित कहानियाँ

- पंचतंत्र की कहानियाँ
- ईसप की बोधकथाएँ
- गिजुभाई की बाल-कहानियाँ
- हितोपदेश की कहानियाँ